पद (मीरा)

पाठ का परिचय

मीरा श्रीकृष्ण की अनन्यभक्त थीं। उन्होंने अपने आराध्य को कहीं निर्गुण निराकार ब्रह्म, कहीं सगुण साकार गोपीवल्लभ और कहीं निर्मोही परदेशी जोगी के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत पाठ में मीरा अपने आराध्य के इन्हीं रूपों पर बलिहारी होती हुई कभी उनसे मनुहार करती हैं, कभी लाड़ लड़ाती हैं तो कभी उलाहना देती हैं। इन पदों में यदि वे उनकी क्षमताओं का स्मरण और गुणगान करती हैं तो उनके कर्तव्य की भी उन्हें याद दिलाती हैं। अपने आराध्य को सर्वस्व समर्पित करने के लिए वे उनकी चिरदासी बन जाना चाहती हैं।

पदों का भावार्थ

पद

1. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

भावार्थ–प्रस्तुत पद में मीरा भगवान श्रीकृष्ण को उनके भक्तवत्सल स्वभाव का स्मरण कराती हुई कहती हैं कि हे हरि, आप इस दुखीजन अर्थात् मीरा के कष्ट दूर करो। आपने भरी सभा में द्रौपदी का चीर बढ़ाकर उसकी लाज बचाई थी। अपने प्रियभक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए आपने अपना सुंदर स्वरूप छोड़कर नरसिंह का रूप धारण किया था। आपने मनुष्यों की ही नहीं, बल्कि डूबते गजराज की भी मगरमच्छ से रक्षा करके उसके कष्टों को दूर किया था। आप भक्तों के रक्षक और कष्ट निवारक हो। मैं (मीरा) आपकी दासी हूँ। हे मेरे प्रिय गिरिधर! मेरे भी कष्टों (विपत्ति) को दूर कर दो।

2. स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीराँ।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।।

भावार्थ–प्रस्तुत पद में मीरा भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि हे श्याम! तुम मुझे अपनी नौकरानी बनाकर रख लो। हे गिरधारी! हे प्यारे! तुम मुझे अपनी सेविका बना लो। मैं तुम्हारी सेविका के रूप में सबसे पहले एक बाग लगाऊँगी; क्योंकि तुम्हें बाग-बगीचे बहुत प्रिय हैं। प्रतिदिन प्रातः उठकर सर्वप्रथम तुम्हारे दर्शन किया करूँगी। वृंदावन की कुंज गली में तुम्हारी लीलाओं का गुणगान करूँगी। तुम्हारे दर्शनों के रूप में मुझे मेरा पारिश्रमिक (मज़दूरी) मिल जाएगा और स्मरण के रूप में ज़ेब-खर्च मिल जाएगा। भावपूर्ण भक्ति के रूप में तो मैं एक बहुत बड़ी जागीर पा जाऊँगी। इस प्रकार ये तीनों चीज़ें मुझे सरलता से प्राप्त हो जाएँगी। मीरा श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करती हुई कहती हैं कि मेरे प्रभु के सिर पर मोर पंखों का मुकुट और साँवले शरीर पर पीतांबर शोभायमान है। उनके गले में वैजयंती माला सुशोभित है। वे मुरलीधर मनमोहन वृंदावन में गाय चराते रहते हैं। मैं उनके लिए ऊँचे-ऊँचे महल बनवाऊँगी और उनमें बीच-बीच में झरोखे लगवाऊँगी और उन झरोखों से कुसुंभी साड़ी पहनकर अपने साँवरिया के दर्शन करूँगी। यह कहती हुई मीरा भगवान के लिए व्याकुल हो जाती हैं और उनसे विनती करती हैं कि हे मेरे प्रभु! मेरा हृदय आपके दर्शनों के लिए बहुत अधीर हो गया है। आधी रात को यमुना के किनारे आकर मुझे दर्शन दो और मेरी व्याकुलता को शांत करो।

शब्दार्थ

हरि = श्रीकृष्ण। **जन** = भक्त। **भीर** = दुख-दर्द। **लाज** = इज़्ज़त। **चीर** = साड़ी, वस्त्र। **नरहरि** = नरसिंह अवतार। **कुंजर** = हाथी। **म्हारी** = हमारी। **स्याम** = श्रीकृष्ण। **चाकर** = नौकर। **रहस्यूँ** = रहना। **नित** = हमेशा। **जागीरी** = जागीर, साम्राज्य। **पीतांबर** = पीले वस्त्र। **धेनु** = गाय। **बारी** = बगीचा। **पहर** = पहन कर। **तीरां** = किनारा। **अधीराँ** = व्याकुल होना।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुंजर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।।

1. मीरा ने अपनी पीड़ा हरने की विनती किससे की है–
(क) ब्रह्मा से (ख) शिव से
(ग) इंद्र से (घ) हरि (कृष्ण) से।

2. हरि ने द्रौपदी की लाज कैसे बचाई–
(क) शत्रुओं से युद्ध करके
(ख) उसका चीर बढ़ाकर
(ग) उसे वस्त्र-आभूषण प्रदान करके
(घ) स्वयं सभा में आकर।

3. भगवान ने नरसिंह का रूप किस भक्त के लिए धारण किया–
(क) ध्रुव के लिए (ख) केवट के लिए
(ग) प्रह्लाद के लिए (घ) सुदामा के लिए।

4. मीरा ने गिरधर से अपना क्या संबंध बताया है–
(क दासी का (ख) सखी का
(ग) प्रेमिका का (घ) पत्नी का।

5. हरि ने डूबते हुए को किसको बचाया–
(क) घोड़े को (ख) बच्चे को
(ग) हाथी को (घ) बंदर को।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग)।

(2) स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ , पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभु दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीराँ।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।।

(CBSE SQP 2021 Term-1)

1. मीरा कृष्ण से क्या प्रार्थना कर रही है–
(क) उनकी पीड़ा दूर करने की
(ख) सेविका के रूप में स्वीकार करने की
(ग) प्रेमिका के रूप में स्वीकार करने की
(घ) उन्हें अपने पास रखने की।

2. कृष्ण की सेविका बनकर मीरा क्या करना चाहती हैं–
(क) बाग सजाना, दर्शन करना, गीत गाना
(ख) प्रशंसा के गीत गाना और गोकुल में रहना
(ग) रोज उठकर उनके दर्शन करना और रोना
(घ) उनकी याद में रोना, दर्शन करना, गीत गाना।

3. मीरा वृंदावन की गलियों में–
(क) कृष्ण से मिलना चाहती है
(ख) कृष्ण का गुणगान करना चाहती है
(ग) कृष्ण को उलाहना देना चाहती है
(घ) कृष्ण की प्रतीक्षा करना चाहती है।

4. कृष्ण की भाव-भक्ति में डूबना किसके समान है–
(क) सुख और वैभव के समान
(ख) मान-सम्मान के समान
(ग) धन-दौलत के समान
(घ) धन और सम्मान के समान।

5. वृंदावन में कौन गाय चरा रहा है–
(क) बलराम (ख) सुदामा
(ग) ग्वाला (घ) श्रीकृष्ण।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. मीराबाई का जन्म कब हुआ–
(क) सन् 1510 में (ख) सन् 1508 में
(ग) सन् 1503 में (घ) सन् 1505 में।

2. मीरा ने रचना की–
(क) दोहों की (ख) चौपाइयों की
(ग) पदों की (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. मीरा ने किसकी भक्ति में पदों की रचना की–
(क) श्रीराम की (ख) श्रीकृष्ण की
(ग) शिव की (घ) ब्रह्मा की।

4. भगवान ने भक्त के कारण किसका रूप धारण किया–
(क) वामन का (ख) मछली का
(ग) नरसिंह का (घ) हाथी का।

5. 'भीर' शब्द का क्या अर्थ है–
(क) भीड़ (ख) पीड़ा
(ग) दुःख (घ) विपत्ति।

6. 'नरहरि' में 'हरि' का अर्थ है–
(क) हरापन (ख) विष्णु
(ग) सिंह (घ) हरण करना।

7. 'बूढ़तो गजराज' से आशय है–
(क) डूबता गजराज (ख) बूढ़ा गजराज
(ग) बढ़ता गजराज (घ) मरता गजराज।

8. हाथी का काव्यांश में प्रयुक्त पर्यायवाची शब्द है–
(क) म्हारी (ख) कुंजर
(ग) भीर (घ) काटी।

9. हरि ने डूबते हुए गजराज की कौन-सी पीड़ा काटी–
(क) उसे डूबने से बचाया और नदी के किनारे पर ले आए
(ख) उसके घायल पैर का उपचार किया
(ग) उसको दिव्य शक्ति प्रदान की
(घ) उसके शत्रु ग्राह को मारकर उसकी पकड़ से मुक्त कराया।

10. 'गिरधर' का शाब्दिक अर्थ है–
(क) गिरे हुए को धारण करने वाला
(ख) गिरकर धैर्य धारण करने वाला
(ग) गिरि को धारण करने वाला
(घ) गिरि पर धारण किया गया।

11. मीरा किसकी चाकरी करना चाहती हैं–
(क) राम की (ख) गिरधारीलाल की
(ग) राजा की (घ) पति की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

12. **मीरा ने श्रीकृष्ण की भावपूर्ण भक्ति को क्या माना है–**
(क) पारिश्रमिक (ख) दैनिक खर्च
(ग) जागीर (घ) भाग्य।

13. **श्रीकृष्ण की वेशभूषा में सम्मिलित है–**
(क) मोर-मुकुट (ख) पीतांबर
(ग) वैजयंती माला (घ) ये सभी।

14. **मीरा आधी रात को श्रीकृष्ण के दर्शन कहाँ करना चाहती हैं–**
(क) मंदिर में (ख) यमुना के किनारे
(ग) गंगा के किनारे (घ) अपने घर में।

15. **मीरा श्रीकृष्ण की चाकर बनकर सर्वप्रथम कौन-सा काम करना चाहती हैं–**
(क) गोविंद के लीला-गायन का
(ख) उनके दर्शन पाने का
(ग) बाग लगाने का
(घ) यमुना के किनारे रास रचाने का।

16. **'कुसुंबी साड़ी' का क्या अर्थ है–**
(क) फूलों के छापेवाली साड़ी
(ख) कुसुम-सी महकने वाली साड़ी
(ग) कुंभी के रंग की साड़ी
(घ) केसरिया रंग की साड़ी।

17. **दैनिक खर्च के रूप में मीरा श्रीकृष्ण से क्या चाहती हैं–**
(क) उनके दर्शन (ख) उनका नाम-स्मरण
(ग) उनकी भाव-भक्ति (घ) उनका लीला-गायन।

18. **'तीनूं बाताँ सरसी' में कौन-सी बात सम्मिलित नहीं है–**
(क) वृंदावन की कुंज गली में गोविंद का गायन करना
(ख) चाकरी में दर्शन पाना और दैनिक खर्च के रूप में नाम-स्मरण करना
(ग) कुसुंबी साड़ी पहनकर साँवरिया के दर्शन पाना
(घ) भाव-भक्ति की जागीर प्राप्त करना।

19. **'हिवड़ो घणों अधीराँ' का अर्थ है–**
(क) हृदय अत्यधिक कठोर है
(ख) हृदय घन के समान भावुक है
(ग) हृदय अत्यधिक धैर्यशाली है
(घ) हृदय अत्यधिक व्याकुल है।

20. **'मोहन मुरली वाला' में अलंकार है–**
(क) अनुप्रास (ख) यमक
(ग) रूपक (घ) श्लेष।

उत्तर– **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (घ) **10.** (ग) **11.** (ख) **12.** (ग) **13.** (घ) **14.** (ख) **15.** (ग) **16.** (घ) **17.** (ख) **18.** (ग) **19.** (घ) **20.** (क)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : मीरा ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर : मीराबाई श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करती हुई कहती हैं कि उनके सिर पर मोर-मुकुट शोभायमान है, साँवले-सलौने शरीर पर पीतांबर और गले में वैजयंती माला सुशोभित है। वे इस सुंदर स्वरूप में वृंदावन में गाय चराते हैं।

प्रश्न 2 : मीरा श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मीराबाई श्रीकृष्ण की अनन्य-भक्त हैं। वे हर समय उनके पास रहना चाहती हैं, उनके दर्शन करना चाहती हैं तथा उनकी सभी प्रकार से सेवा करना चाहती हैं। यह कार्य एक चाकर द्वारा ही संभव है। अच्छा सेवक अपनी सेवा से अपने स्वामी को प्रसन्न करके उसका कृपापात्र बन जाता है। मीरा भी अपने आराध्य को प्रसन्न करके उनकी कृपा प्राप्त करना चाहती हैं, इसीलिए वह उनकी चाकरी करना चाहती हैं।

प्रश्न 3 : मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है? *(CBSE 2016, 19)*

उत्तर : पहले पद में मीरा हरि को उनकी क्षमताओं और उनके भक्तरक्षक स्वभाव की याद दिलाती हुई उनसे अपनी पीड़ा हरने की विनती करती हैं। वे कहती हैं कि हे हरि! आपने द्रौपदी की लाज बचाई थी, अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की थी और गजराज के प्राण बचाए थे। मैं तो आपकी दासी हूँ, इसलिए हे गिरिधर! मेरे सांसारिक कष्टों को हर लो।

प्रश्न 4 : प्रथम पद में मीरा अपने आराध्य से कैसे और क्या प्रार्थना करती हैं? *(CBSE 2023)*

उत्तर : प्रथम पद में मीरा ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण को उनकी सामर्थ्य की याद दिलाई है। उन्होंने कहा कि हे हरि! आप लोगों की विपदा दूर करते हैं। आपने द्रौपदी की लाज बचाई, प्रह्लाद की जीवन-रक्षा की और डूबते गजराज को बचाया। मीरा प्रार्थना करती है कि आपने अनेक लोगों के दुख दूर किए हैं। मैं तो आपकी दासी हूँ इसलिए मेरी विपदा दूर करो।

प्रश्न 5 : मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर : श्रीकृष्ण को पाने के लिए मीरा निम्नलिखित कार्य करने को तैयार हैं–
(i) वे श्रीकृष्ण की चाकरी करना चाहती हैं।
(ii) चाकर बनकर उनके लिए एक बाग लगाना चाहती हैं।
(iii) वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं।
(iv) उनके रूप-सौंदर्य का वर्णन कर उन्हें लाड़ लड़ाना चाहती हैं।
(v) वे श्रीकृष्ण के लिए ऊँचे-ऊँचे महल बनाना चाहती हैं।
(vi) उनके दर्शन पाने के लिए कुसुंभी साड़ी पहनने को तैयार हैं।

प्रश्न 6 : मीरा की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : मीराबाई की भाषा वैसे तो ब्रजभाषा है, लेकिन उसमें राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, खड़ीबोली और पूर्वी हिंदी का मिश्रण है। भाषा सहज, सरल, सरस और भावों के अनुकूल है। मीरा ने श्रीकृष्ण के लिए अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया है। राजस्थानी की अनुनासिकता से ब्रजभाषा की मिठास और अधिक हो गई है। भाषा में कोमलता, सरसता और संगीतात्मकता का अनोखा संयोग है। अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। मीरा की शैली को गीतात्मक शैली कह सकते हैं। इनके पदों को विभिन्न रागों में गाया जाता है।

प्रश्न 7 : मीरा कौन-कौन-से तर्क देकर श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना कर रही हैं?

उत्तर : मीरा निम्नलिखित तर्क देकर, श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना कर रही हैं–

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(i) आपने भरी सभा में द्रौपदी की लाज बचाई और उसे दर्शन दिए; अतः मुझे भी दर्शन दीजिए।

(ii) आपने गजराज के पुकारने पर आकर उसके प्राणों की रक्षा की।

(iii) प्रह्लाद के स्मरण करने पर आपने नरसिंह के रूप में आकर उसकी रक्षा की। इसलिए मुझे भी दर्शन दीजिए क्योंकि मैं आपकी दासी हूँ।

प्रश्न 8 : 'हरि आप हरो जन री भीर।' पद के आधार पर मीरा की लोक-कल्याण की भावना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर : 'हरि आप हरो जन री भीर।' पद में मीरा की लोक-कल्याण की भावना प्रदर्शित हुई है। वे भगवान से केवल अपनी ही नहीं, बल्कि समस्त भक्तजनों की विपदा को हरने की प्रार्थना करती हैं। वे हरि को उनके भक्तवत्सल स्वभाव की याद दिलाती हैं और कहती हैं कि आपने द्रौपदी, गजराज और प्रह्लाद के कष्ट दूर किए हैं; अतः आज भी सभी भक्तजनों की पीड़ा को दूर करो।

प्रश्न 9 : 'मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।' भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति में मीरा की अपने आराध्य से मिलने की तड़प प्रकट हो रही है। इसका भाव यह है कि मीरा भगवान कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि हे प्रभु! मैं आपकी दासी हूँ, आपके अतिरिक्त मेरा कोई नहीं है। हे गिरिधर नागर! आप मुझे दर्शन दो; क्योंकि मेरा हृदय आपके दर्शनों के लिए बहुत ही व्याकुल और अधीर हो रहा है। इसमें मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भाव-भक्ति प्रदर्शित हुई है।

प्रश्न 10 : मीरा के पदों में कृष्णलीलाओं एवं महिमा के वर्णन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर : मीरा के द्वारा श्रीकृष्ण की महिमा एवं उनकी लीलाओं का वर्णन इसलिए किया गया है; क्योंकि वे अपने आराध्य की दयालुता, कृपा और भक्तवत्सलता का परिचय देना चाहती हैं। मीरा के प्रभु सदैव अपने भक्तों का कष्ट हरण करते रहते हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि वे अपनी दासी मीरा के कष्टों को भी अवश्य दूर करेंगे।

प्रश्न 11 : मीरा अपने हृदय के अंधकार को कैसे दूर करना चाहती हैं?

उत्तर : मीरा भगवान की भक्ति द्वारा अपने हृदय के अंधकार को दूर करना चाहती हैं। वह चाहती हैं कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हुए तथा वनमाला धारण किए पीतांबरधारी रूप में उसे दर्शन दें, ताकि उसके मन का अंधकार नष्ट हो जाए।

प्रश्न 12 : गजराज की सहायता कृष्ण ने कैसे और क्यों की थी? मीरा के 'पद' के आधार पर बताइए।

उत्तर : पौराणिक कथा के अनुसार सरोवर में जल पीने के लिए गए गजराज को मगरमच्छ ने पकड़ लिया था। जब बचने का कोई उपाय नहीं रहा तो गजराज ने अपनी प्राण-रक्षा के लिए भगवान हरि को पुकारा। उसकी पुकार सुनकर भगवान दौड़े चले आए और मगरमच्छ को मारकर गज की रक्षा की। उन्होंने गज की रक्षा इसलिए की; क्योंकि वह उनका भक्त था।

प्रश्न 13 : चाकरी से मीरा को क्या लाभ मिलेगा?

उत्तर : श्रीकृष्ण की चाकरी से मीरा को उनके दर्शन, स्मरण और भाव-भक्ति का लाभ मिलेगा।

प्रश्न 14 : मीरा श्रीकृष्ण के लिए बाग क्यों लगाना चाहती हैं?

उत्तर : भगवान श्रीकृष्ण को बाग-बगीचों और लता-कुंजों में विहार करना अतिप्रिय है; इसीलिए मीरा बाग लगाना चाहती हैं, ताकि वह अपने आराध्य को उन बाग-बगीचों में विहार करते देख सकें।

प्रश्न 15 : मीरा ने भाव-भक्ति को जागीर क्यों माना है?

उत्तर : जागीर बहुत बड़े क्षेत्र या प्रदेश की संपूर्ण भूमि के स्वामित्व को कहते हैं। मीरा के लिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति सबसे बड़ी संपत्ति है, इसलिए वह उसे जागीर मानती हैं। उन्होंने एक अन्य पद में भी कहा है–"पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।"

प्रश्न 16 : मीरा ने अपने पदों में प्रभु को क्या-क्या नाम दिए हैं? *(CBSE 2016)*

उत्तर : मीरा ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण को हरि, गिरधर, श्याम, गिरधारी, लाला, गोविंद, मोहन, मुरलीवाला, साँवरिया, गिरधर नागर आदि नाम दिए हैं।

प्रश्न 17 : मीरा ऊँचे-ऊँचे महलों और बीच-बीच में खिड़कियों की कल्पना क्यों करती हैं? *(CBSE 2015)*

उत्तर : मीरा ऊँचे-ऊँचे महल बनवाने और उनमें बीच-बीच में खिड़कियाँ लगवाने की कल्पना इसलिए करती हैं, ताकि उस ऊँचे महल की खिड़कियों से वह वृंदावन में गाय चराते हुए अपने आराध्य देव के मनोहारी स्वरूप के दर्शन करती रहें। वे उन महलों में फुलवारी और बगीचा भी लगवाना चाहती हैं, ताकि जब श्रीकृष्ण कभी उसे दर्शन देने आएँ तो उन्हें देखकर वे प्रसन्न हो जाएँ।

प्रश्न 18 : मीरा यमुना-तट पर आधी रात में श्रीकृष्ण के दर्शन क्यों करना चाहती हैं? *(CBSE 2015)*

उत्तर : मीरा श्रीकृष्ण को अपने आराध्य के साथ-साथ पति रूप में भी मानती हैं। उन्होंने कहा भी है–'जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।' इसीलिए वे आधी रात में उनसे यमुना के तट पर मिलना चाहती हैं, ताकि अपने मन की प्रेमभावना को एकांत में उनके सामने प्रकट कर सकें।

प्रश्न 19 : मीरा ने अपना सेवा-धर्म किस प्रकार निभाने की बात की है?

उत्तर : मीरा श्रीकृष्ण की सेविका बनकर उनके लिए एक बाग लगाएँगी। प्रतिदिन प्रातः उठकर सबसे पहले उनके दर्शन करेंगी। वृंदावन की गली-गली में उनकी लीलाओं का गुणगान करेंगी। उनके दर्शन, स्मरण और भक्ति को ही अपनी सेवा का पारिश्रमिक मानेंगी। वे उनके लिए ऊँचा महल बनवाएँगी, जिसके झरोखों से वे वृंदावन में गाय चराते हुए अपने मनमोहन के दर्शन करेंगी। इस प्रकार वह पूर्ण समर्पण से श्रीकृष्ण के प्रति अपने सेवा-धर्म को निभाएँगी।

प्रश्न 20 : मीरा के पदों की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : मीरा के पदों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) मीरा का प्रत्येक पद श्रीकृष्ण की भक्ति-भावना से ओत-प्रोत है।

(ii) इनमें भक्ति और शृंगार रसों का अद्भुत संयोग है।

(iii) इनमें मीरा की विरह-वेदना, दैन्य भाव और माधुर्यभाव सभी मर्म को छू लेते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(iv) पदों की भाषा सरल, सरस, सुकोमल और प्रवाहपूर्ण है। इनकी ब्रजभाषा में राजस्थानी, गुजराती तथा पंजाबी भाषाओं का मिश्रण है।

(v) पदों में गेयता और संगीतात्मकता है तथा उन्हें विभिन्न रागों में गाया जा सकता है।

(vi) इनमें अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 21 : मीरा ने हरि को उनकी क्षमताओं का स्मरण कराने के लिए क्या-क्या दृष्टांत दिए हैं?

उत्तर : मीरा ने हरि को उनकी क्षमताओं का स्मरण कराने के लिए ये दृष्टांत दिए हैं–

(i) आप भक्त-वत्सल हैं और सदैव भक्तजनों के कष्ट हरते रहे हैं।

(ii) आपने द्रौपदी का चीर बढ़ाकर भरी-सभा में उसकी लाज बचाई थी।

(iii) आपने अपने प्रियभक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह का रूप धारण किया था।

(iv) गजराज ने जब आपको पुकारा तो आपने मगरमच्छ को मारकर उस हाथी के प्राणों की रक्षा की थी।

(v) मैं आपकी दासी हूँ। अपने भक्तों की रक्षा करना आपका स्वभाव है; अतः आप मेरी भी रक्षा करो।

प्रश्न 22 : मीरा के पहले पद में जो दृष्टांत दिए गए हैं, उनसे संबंधित कथाओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर : **द्रौपदी की कथा**–द्रौपदी पांडवों की पत्नी थी। युधिष्ठिर ने द्यूत क्रीडा में उसे भी दाँव पर लगा दिया। जब पांडव द्यूत में हार गए तो दुर्योधन ने उन्हें अपमानित करने के लिए द्रौपदी को भरी-सभा में बुलवाया और अपने भाई दुःशासन को उसके चीर-हरण का आदेश दिया। उस समय द्रौपदी ने अपनी लाज बचाने के लिए श्रीकृष्ण से गुहार लगाई। श्रीकृष्ण ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसका चीर बढ़ाना प्रारंभ कर दिया। चीर हरण करने वाला दुःशासन थककर गिर गया, लेकिन द्रौपदी का चीर हरण नहीं कर सका।

प्रह्लाद की कथा–प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था, लेकिन उसका पिता हिरण्यकशिपु विष्णु-विरोधी था। उसने अपने पुत्र को विष्णु की भक्ति करने से मना किया। प्रह्लाद ने विष्णु-भक्ति नहीं छोड़ी। तब हिरण्यकशिपु ने उसे मारने के अनेक प्रयास किए। भगवान विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण किया और हिरण्यकशिपु का वध किया।

गजराज की कथा–एक बार गजराज पानी पीने के लिए एक सरोवर में गया। वहाँ मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया और उसे पानी में खींचने लगा। ऐरावत ने अपनी रक्षा के लिए भगवान विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से मगरमच्छ को मारकर गजराज की रक्षा की।

प्रश्न 23 : मीरा के काव्य में निहित भक्ति की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : मीरा का मन बचपन से ही श्रीकृष्ण की भक्ति के रंग में रँग गया था। वे श्रीकृष्ण की अनन्य-भक्त थीं। कृष्ण के अलावा उन्होंने किसी अन्य देव का ध्यान तक नहीं किया। उन्होंने भगवान के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों की उपासना की। वे अपने आराध्य को कभी निर्गुण निराकार ब्रह्म मानती हैं तो कभी सगुण साकार गोपीवल्लभ कृष्ण। उनकी भक्ति में अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव है। अपने पदों में वे पूर्णतः कृष्णमयी दिखाई देती हैं। उनकी भक्ति मुख्यतः माधुर्यभाव की है। वे श्रीकृष्ण को अपना आराध्य भी मानती हैं और प्रियतम भी। वे कभी अपने आराध्य की मनुहार करती हैं, कभी प्यार से उन पर सर्वस्व लुटाने को उद्यत रहती हैं तो कभी उन्हें उपालंभ भी देती हैं। उनके ये सभी भाव बड़े मर्मस्पर्शी हैं। मीरा के काव्य में व्यक्त भक्ति-भावना अन्य भक्तिकालीन कवियों से अनोखी है।

प्रश्न 24 : अपने आराध्य श्रीकृष्ण के लिए मीरा द्वारा की गई चेष्टाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य-भक्त थीं। उन्होंने अपने आराध्य के लिए घर-परिवार सबकुछ त्याग दिया था। वे श्रीकृष्ण की चाकरी करना चाहती थीं। भगवान के लिए सुंदर बाग-बगीचे लगाना चाहती थीं। झरोखेदार महल बनवाना चाहती थीं, ताकि उस महल के ऊपर चढ़कर झरोखों से वृंदावन में गाय चराते हुए मनमोहन को देखती रहें। वे कुसुंबी साड़ी पहनकर आधी रात के समय यमुना के तट पर अपने आराध्य श्रीकृष्ण से मिलना चाहती हैं। उनके दर्शनों के लिए मीराबाई का हृदय बहुत ही अधीर हो रहा है।

प्रश्न 25 : मीराबाई ने हरि से स्वयं का कष्ट दूर करने की जो विनती की है, उसमें स्वयं का कौन-सा संबंध बताया है? जिन भक्तों के उदाहरण दिए गए हैं, उनमें से एक पर की गई कृष्ण-कृपा को संक्षेप में लिखिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : मीराबाई ने श्रीकृष्ण को उनके भक्तवत्सल स्वभाव का स्मरण कराते हुए स्वयं के कष्ट दूर करने की प्रार्थना की है। इसके लिए उन्होंने द्रौपदी, प्रह्लाद और गजराज के उदाहरण दिए हैं। उन्होंने स्वयं को श्रीकृष्ण की दासी बताया है।

द्रौपदी की रक्षा का उदाहरण–द्यूत क्रीडा में युधिष्ठिर दुर्योधन से सबकुछ हार गए। उन्होंने इस क्रीडा में अपनी पत्नी द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया और उसे भी हार गए। दुर्योधन ने पांडवों को अपमानित करने के लिए द्रौपदी को भरी सभा में बुलवाया और दुःशासन को उसके चीर-हरण का आदेश दिया। द्रौपदी ने अपनी लाज की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण का स्मरण किया। श्रीकृष्ण ने द्रौपदी का चीर इतना बढ़ाया कि दुःशासन चीर-हरण नहीं कर सका। इस प्रकार भगवान ने द्रौपदी की लाज बचाई।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in